International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 5; May 2016; Page No. 306-310

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और धर्मवीर भारती की कहानियों में निहित पारिवारिक मूल्यों का विवेचन

[1] श्रीमती कल्पना अभिषेक पाठक [2] हरिणी रानी आगर

[1] शोधार्थी–डॉ. सी. वी. रामन वि.वि., सहा. प्राध्या. हिन्दी, शास. महाविद्यालय कोतरी, जिला–मुंगेली (छ.ग)
[2] सहा. प्राध्या. हिन्दी, शास. बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग)

प्रस्तावना: परिवार सम्पूर्ण मानव समाज की आधारशिला है। मानवीय संबंधों के आधार पर निर्मित विविध समूहों में परिवार सबसे छोटी इकाई है। यह मनुष्य की प्रथम पाठशाला है, जिससे प्राप्त संस्कारों व मूल्यों से मनुष्य समाज में रहने योग्य बनता है। परिवार के सदस्य परस्पर भावनात्मक बंधन से बंधे होते हैं। परिवार का अस्तित्व वहाँ रहने वाले सदस्यों के प्रेम, सहयोग, दया, ममता, वात्सल्य, सहिष्णुता, त्याग, बलिदान आदि भावनाओं पर आधारित होता है। यहीं भावनाएँ पारिवारिक मूल्य कहलाते हैं। इन पारिवारिक मूल्यों का दर्शन हमें कई रिश्तों में दिखाई देता है, जैसे माता व उसके बच्चों का संबंध, पति–पत्नी का संबंध, भाई–बहन का संबंध, विवाहोत्तर रिश्तेदारों का संबंध आदि।

निराला व भारती जी ने जीवन के कई पहलुओं को अपनी कहानियों में कलात्मक ढंग से उकेरा है। कालजयी रचनाकार होने के कारण उनकी रचनाओं में मानवीय जीवन के सभी पक्ष पर लेखनी चली है। इन दोनों रचनाकारों ने अपनी कहानियों में परिवार, रिश्ते–नाते तथा पारिवारिक भावनाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। इन दोनों लेखकों ने अपनी कहानियों में पारिवारिक रिश्तों को बारिकी से उकेरा है जिससे ये घटनाएँ हमारे आस–पास की ही प्रतीत होती है।

परिवार संपूर्ण मानव समाज की आधारशिला है। व्यक्ति के मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार से ही संभव है। परिवार के द्वारा ही मनुष्य मानव मूल्यों को अपनाता है। व्यक्ति के सामाजीकरण में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पारिवारिक रिश्ते जैसे– माता–पिता, संतान, पति–पत्नी, भाई–बहन आदि आपस में प्रेम, मधुरता, स्नेह, विश्वास व अपनापन के माध्यम से कायम होते हैं। माता–पिता के व्यवहार एवं पारिवारिक वातावरण का मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अच्छे संस्कार जहाँ विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य को आत्मबल एवं संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करते हैं, वही उसकी अनुपस्थिति में मनुष्य पतन की ओर अग्रसर होता जाता है। परिवार के इसी महत्व और वर्तमान परिवेश में परिवार की स्थिति का अध्ययन हमें निराला व भारती जी की कहानियों में यथार्थ रूप में हो जाता है। इन दोनों रचनाकारों ने अपनी कहानियों में परिवार का वास्तविक रूप प्रदर्शित किया है। इनकी रचनाओं में मुख्य रूप से निम्न संबंधों का चित्रण किया गया है–

माँ व संतान का संबंध

पुरूष प्रधान समाज में परिवार का मुखिया पुरूष को माना जाता है। पर मातृत्व ऐसा गुण है जो स्त्रियों को परिवार में सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है। 'महादेवी वर्मा' ने मातृत्व के संबंध में लिखा है कि– ''प्रकृति ने न केवल उसके शरीर को ही अधिक सुकुमार बनाया, वरन उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हृदय में अधिक संवेदना, आँखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी।'' [1] नारी मनुष्य की जननी होती है। उसमें स्वभाव से ही कोमलता, ममत्व, व स्नेह भरा रहता है। एक माँ स्वयं कष्ट सहन कर लेती है पर अपने बच्चे को कष्ट में नहीं देख सकती। मातृत्व की इस भावना को निराला व भारती जी ने अपनी रचनाओं में अलग–अलग परिस्थितियों में रखकर समाज में माँ की छवि व उसकी स्थिति बतलाने का प्रयास किया है।

भारती जी की कहानी 'कुलटा' में 'लाली' होली के अवसर पर बनाए गए पकवानों को बड़े चाव से स्वाद लेकर खा रही थी और खटोले में पड़ा उसका बच्चा रो रहा था। यह दृश्य मन को सोचने पर विवश कर देता है कि क्या उस महिला में ममत्व नहीं था ? यदि उसमें ममत्व नहीं होता तो वह दूसरा विवाह ही नहीं करती । उसने दूसरा विवाह अपने बच्चों के पालन–पोषण के लिए ही किया था। वह सारे कष्ट केवल अपने संतानों के लिए ही सह रही थी। पर यह भी सत्य था कि अपने पति की अनुपस्थिति में ही वह भरपेट भोजन कर सकती थी। इसलिए वह अपने बच्चे के रूदन को अनसुना करके पकवान खाने लगी।

भारती जी की कहानी 'एक बच्ची की कीमत' में अकाल की पीड़ा झेलती एक माँ की बेबसी का चित्रण है जो अपनी बेटी समेत कई दिनों से भूखी थी। उसके पास अपनी बेटी के प्राणों की रक्षा का एकमात्र उपाय यह था कि वह उसे पंजाबी के हाथ बेच दे, जिससे कम से कम उसकी बेटी को खाने को तो मिल जाएगा। पर उसकी ममता उसे इस कार्य की अनुमति नहीं देती। जब उसकी बेटी की हालत बदतर होती गई तो वह सोचती है कि– ''खुदग़रज! तुम माँ हो, अपनी एक छोटी–सी ख़्वाहिश पर अपनी बच्ची की जान ले रही हो। क्यों नहीं बेच देतीं ? आराम से तो रहेगी, पास या दूर !'' [2] अतः उसने अपनी बच्ची की प्राणों की रक्षा के लिए उसे बेचना स्वीकार किया। इससे जो पैसा मिलता उससे उसे भी कुछ खाने को मिल जाता। वह पंजाबी के पास गई पर उससे कुछ कहा नहीं जा रहा था। ''वह क्या कहे ! उसने अभी तक मछलियाँ बेची थीं, तरकारी बेची थी, धान बेचा था, अपनी सन्तानें कभी नहीं बेची थीं। उसे नहीं मालूम था सन्तान बेचने के लिए ग्राहक कैसे पटाया जाता है।'' [3] फिर भी उसे अपनी बच्ची की भूख से रक्षा करने के लिए बच्ची को बेचना पड़ता है। यह कहानी भूख से तड़पती बच्ची के लाचार माँ की बेबसी को बतलाती है, जिसमें मजबूरीवश उसे अपनी बच्ची का सौदा करना पड़ता है। यह कहानी एक ओर माँ की बेबसी को चित्रित करती है तो दूसरी ओर समाज का विभत्स रूप भी दिखाती है।

निराला जी की कहानी 'दो दाने' में एक माँ (कमला) की मजबूरी दिखाई देती है जिसे अपने भूखे बच्चों के लिए अपनी पुत्री चम्पा का सौदा करने के लिए विवश होना पड़ता है। इसका मार्मिक चित्रण करते हुए निराला जी लिखते हैं कि– ''कमला का हाल बयान से परे था। हृदय के टुकड़े–टुकड़े हो रहे थे। पुरानी मर्यादा का बाँध टूट रहा था। दुख के आँसू उमड़कर सारा घर डुबा देना चाहते थे। बच्चे सहम न जायँ, चम्पा घबरा न जाय कि आता हुआ दाना तूफान और बाढ़ में जैसे उड़ जाय और बह जाय। वह पत्थर से दिल को बाँध रही थी। काँपते हाथों भी बेटी को एक साफ साड़ी पहनाकर सजाया।'' [4] यह कहानी एक माँ की बेबसी को बतलाती है जिसे

अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए अपनी बच्ची का सौदा करने को विवश होना पड़ता है।

भारती जी कहानी' बंद गली का आखिरी मकान' में बिरजा अपने बेटे हरिया के स्वभाव व उसके गतिविधियों से चिंतित रहती थी। वह कहती है कि– ''उसकी कोख में से सिल–लोढ़ा जनमता तो किसी काम तो आता, इस करमजले मूँड़ीकटेहरिया ने तो नाम डुबो दिया।'' [5] ये पंक्तियाँ बेटे के स्वभाव व उसके क्रियाकलाप से परेशान माँ की व्यथा को बतलाती हैं।

भारती जी की कहानी 'भूखा ईश्वर' में एक भिखमंगी, भूखी माँ का ममत्व हृदय को स्पर्श कर जाता है। एक भिखमंगे को फूटपाथ पर पड़े पत्तल में पूड़ी का एक टूकड़ा मिलता है तो वह उसे चाव से खाने लगता है। उसकी पत्नी कहती है कि उसका बच्चा दो दिन से कुछ नहीं खाया है अतः छोटा सा टुकड़ा बच्चे को भी दे दे। पर वह उसका कुछ जवाब न देकर चुपचाप खाने लगता है। ''वह औरत उठी और वहाँ गयी जहाँ अब भी कुत्ते पत्तल चाट रहे थे। उसने पास पड़े पत्थर को उठाना चाहा। कुत्ता गुर्राया। ..... उसने मौका पाकर वह टुकड़ा उठा लिया–कि यकायक कुत्ता गुर्राकर उठा और बाँहे झकझोर डालीं। मगर फिर भी उसने टुकड़ा न छोड़ा।...वह औरत आयी और उसने अपने बच्चे को वह टुकड़ा दे दिया। बच्ची ने टुकड़ा कुतरा और मुसकराकर माँ की ओर देखा। माँ दर्द से हाथ झिटक रही थी, मगर बच्ची की मुसकराहट पर वह भी मुसकरा उठी और झुककर उसने बच्ची के ओठ चूम लिये।'' [6] इस कहानी में एक भीख मांगने वाली अभावग्रस्त भूखी महिला का अपने बच्चे की भूख मिटाने का संघर्ष और उसकी लाचारी को बतलाया गया है। यह कहानी माँ के अंदर की ममत्व की गरिमा को बतलाती है।

निराला जी ने 'देवी' नामक कहानी में एक पागल युवती के हृदय के मातृत्व भाव का वर्णन करते हुए लिखा है कि– ''डेढ़–दो साल के कमजोर बच्चे को माँ मूक भाषा सिखा रही थी– आप जानते हैं, वह गूँगी थी। बच्चा माँ को कुछ कहकर न पुकारता था, केवल एक नजर देखता था, जिसके भाव में वह माँ को क्या कहता आप समझिए; उसकी माँ समझती थी; तो क्या वह पागल और गूँगी थी?'' [7] यह कहानी एक पागल और गूँगी माँ में निहित मातृत्व भाव को उजागर करती है।

निराला जी की कहानी 'हिरणी' में मातृत्व भाव का चित्रण मिलता है। इस कहानी में एक माँ की बेबस दशा का वर्णन है। इस कहानी में हिरणी एक अनाथ लड़की थी, जिसे रानी ने आश्रय देने के नाम पर सेविकाओं की तरह पाला। जब हिरणी अपने बीमार बच्ची की सुश्रुषा के लिए रानी साहिबा की सेवा में नहीं पहुँच पाती तो रानी साहिबा उसे बुलाने अपने सेवक को भेजती है। उस समय हिरणी अपने बच्चे को दवा पिला रही थी, तभी रानी साहिबा का सेवक उसे रानी की सेवा में उपस्थित होने के लिए लेने चला आया। तब वह गिड़गिड़ाते हुए कहती है–''कुछ देर के लिए छोड़ दो, मयना को दवा पिला दूँ।'' [8] हिरणी की इन पंक्तियों में एक माँ की बेबसी का वर्णन है। पर रानी साहिबा का हुक्म मानते हए सेवक उसे जबरन ले चलता है।

भारती जी की कहानी 'नारी और निर्वाण' में निर्वाण प्राप्ति के लिए गए सिद्धार्थ के मन में जब यशोधरा का मातृत्व रूप सामने आता है तो उन्हें यह आभास होता है कि– ''नारी का यह स्वरूप–मातृत्व की यह छाया–मैं आज तक इससे अनजान था! नारी! तुम नारी बनकर इस संसार में बहा देती हो प्रेम की धारा और प्यारे शिशु उसमें जलक्रीड़ा करते हैं। जीवन दुःखमय है पर प्रेम की यह छाया उसमें भर देती है सुख की ज्योति।'' [9] जब सिद्धार्थ अपने पुत्र राहुल को भी भिक्षु बनाना चाहता है तो उसे यशोधरा के पास जाना पड़ता है। तो यशोधरा उससे कहती है कि अंत में निर्वाण को नारी के सामने झूकना पड़ता है। इसके प्रत्युत्तर में सिद्धार्थ कहता है कि–''..निर्वाण प्रणयिनी गोपा के सामने नहीं झुका, वह झुका है राहुल की माता के सामने। निर्वाण नारी के सामने झुका अवश्य–पर तब जब मातृत्व की साधना ने नारी को निर्वाण से भी ऊँचा बना दिया।'' [10] इस कहानी में माँ को प्रणयिनी और निर्वाण से भी ऊँचा स्थान दिया गया है।

दोनों रचनाकारों की रचनाओं में अलग–अलग परिस्थितियों में माँ की स्थिति को चित्रित किया गया है। इनकी रचनाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि निराला जी ने अपनी रचनाओं में मातृत्व की गरिमा तथा माँ के त्याग व समर्पण की भावना को उकेरा है तो भारती जी ने परिस्थिति अनुरूप माँ के व्यवहार का परीक्षण करने का प्रयास किया है।

पति–पत्नी का संबंध

मनुष्य को केवल रोटी, कपड़ा और मकान की ही आवश्यकता नहीं होती, अपितु उसे काम, प्रेम और संतान की चाहत होती होती है। इसके लिए पति–पत्नी और परिवार का होना आवश्यक है। पति–पत्नी का संबंध प्रेम और विश्वास पर टिका होता है। यदि प्रेम और विश्वास न हो तो यह रिश्ता अपना अस्तित्व खो देता है।

पति–पत्नी के बीच प्रगाढ़ संबंध एक–दूसरे को संबल प्रदान करता है। पति–पत्नी में एक–दूसरे के प्रति विश्वास की भावना होनी चाहिए। पर जब दम्पत्ति एक–दूसरे के गलत कार्यों में भी सहमति प्रदान करने लगे तब यह अहितकर हो जाता है। निराला जी की कहानी 'अर्थ' में रामकुमार की पत्नी अपने अकर्मण्य पति को सही राह में लाने के स्थान पर उसकी सभी बातों में सहमति देकर उसे और भी अकर्मण्य बना देती है। जब रामकुमार के पिता की मृत्यु हो जाती है और उसके पास आय का कोई स्त्रोत नहीं बच जाता । वह अपनी पत्नी के गहने बेचकर धन जुटाने का प्रयास करता है तो उसकी पत्नी कहती है– ''तुम्हारी जैसी इच्छा हो, करो–फिर हम दोनों एक साथ भीख माँगेंगे, पर अब मैं तुम्हें कहीं भी न जाने दूँगी। मेरे चार हजार के गहने हैं, तुम सब बेच डालो।'' [11] पति–पत्नी का ऐसा प्रेम जो एक–दूसरे को कर्तव्यविमूढ़ बना दे वह दोनों के लिए हितकर नहीं है।

भारती जी की कहानी 'गुलकी बन्नों' में गुलकी का पति निर्दयी था। मरा हुआ बच्चा होने के कारण उसने गुलकी पर कई अत्याचार किए। उसे सीढ़ी से ढकेल दिया, जिससे गुलकी का कूबड़ निकल आया था। पर बाद में अपनी दूसरी पत्नी का बच्चा होने पर सेवा करवाने के लिए गुलकी को लाने के लिए पत्र लिखता है तब सत्ती गुलकी के जाने का विरोध करती है। जिस पर निरमल की माँ कहती है– ''अरे बिटिया, पर गुजर तो अपने आदमी के साथ करैगी न ! जब उसकी पत्री आयी है तो गुलकी को जाना चाहिए। और मरद तो मरद। एक रखैल छोड़ दुइ–दुइ रखैल रख ले तो औरत उसे छोड़ देगी ?.....पति तो भगवान हैं बिटिया ! ओका जाय देव !'' [12] इस कहानी में समाज में स्त्री की दशा और पुरूषों की स्वतंत्रता का चित्रण है।

भारती की कहानी 'सावित्री नम्बर दो' में एक बीमार पत्नी की मनोव्यथा का चित्रण है। सावित्री मन ही मन पुराणों में वर्णित सावित्री को संबोधित करते हुए एक स्त्री के मनोभावों को प्रकट करते हुए कहती है– ''तुम तो जानती हो कि हम स्त्रियाँ चाहे सुन्दर हों या न हों लेकिन पति की आँखों का झलकता नशा, उसकी बाहों का गर्म कसाव, कान में धीरे से कही गयी उसकी झूठी–सच्ची बातें हमें कितना भर देती हैं! हमारे शरीर अकस्मात् कितने बहुमूल्य; कितने गौरवमय हो उठते हैं ! लगता है हमारे पास चाहे कुछ न हो पर एक चीज़ है उन्हें देने को, एक तृप्ति, एक उल्लास, एक भराव जो हम, केवल हम अपने शरीर से दे सकते हैं।'' [13] इस कहानी में एक लाचार बीमार पत्नी का अपने पति के प्रति कर्तव्यों को पूरा न कर पाने की व्यथा का चित्रण है।

भारती जी की कहानी 'चाँद और टूटे हुए लोग' में पति–पत्नी के संबंध को प्रेम से बढ़कर बताया गया है। इस कहानी का पात्र विनय

कहता है कि–''मैंने इससे अच्छी लड़कियाँ देखी हैं, शायद उन्हें प्यार भी किया है, हफ़्तों पागल भी रहा हूँ, लेकिन आज लगता है, यह सब अस्थायी है, उम्र का तकाज़ा, एक उत्सुकता, एक शौक। लेकिन पत्नी की हमदर्दी, उसका स्नेह, इसमें कुछ और ही रस रहता है।'' [14] इस कहानी में पति–पत्नी के रिश्तें का महत्व बतलाया गया है।

भारती जी की कहानी 'एक पत्र' में एक भिखमंगा परिवार दयनीय दशा में चला जा रहा था। उनमें से एक आदमी अचेत होकर गिर जाता है। तब उसकी पत्नी अपने बच्चे समेत उसके पास रूक जाती है । शेष सभी उसे उसी दशा में छोड़कर चले जाते हैं। उसकी पत्नी अपने पति के लिए रोटी के टुकड़े की व्यवस्था करके लाती है। इस कहानी में हम देखते हैं कि पति–पत्नी के रिश्ते में इतनी गहराई है जो विकट परिस्थिति में भी साथ नहीं छोड़ते।

पति–पत्नी यदि एक–दूसरे का सहारा बने तो जीवन की समस्याएँ कम लगने लगती है। भारती जी की कहानी 'मुर्दों का गाँव' में भीषण अकाल के बीच एक जुलाहे दम्पत्ती के दाम्पत्य जीवन का चित्रण मिलता है। अकाल की चपेट में उनके घर के तीन सदस्यों की मृत्यु हो चुकी थी। अब केवल जुलाहा और जुलाहिन बचे थे जो भूख से इतने कमज़ोर हो गए थे कि करघा भी नहीं चला सकते थे। वे जंगल से जड़े खोदकर खाया करते थे। जब जुलाहा बीमार पड़ गया तो जुलाहिन जड़े खोदने जाती थी। एक दिन खुरपी से उसके बायें हाथ की तर्जनी और अँगूठा कट जाता है तो जुलाहा उसे चिल्लाकर बोला– ''निकल जा मेरे घर से, अब तू बेकार है, न करघा चला सकती है, न जड़े खोद सकती है।'' [15] जुलाहे ने अपना पति धर्म नहीं निभाया उसने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया क्योंकि अब वह उसके काम की नहीं रह गई थी। पर इसके बाद भी जुलाहिन ने अपने मरते दम तक अपने पत्नी धर्म का पालन किया। जब लेखक के मित्र ने उसकी भूखी दशा को देखकर उसे खाने के लिए केला दिया तो वह उसे अपने पति की लाश के मुँह पर रख देती है। जुलाहिन के त्याग, कर्तव्यबोध और पतिव्रता धर्म को देखकर करूणा का संचार हो जाता है। लेखक लिखते हैं कि – ''उँगलियाँ कट जाने पर यह निकाल दी गयी, फिर किस बंधन के सहारे, आख़िर किस आधार के सहारे यह मरने के पहले जुलाहे के पास आयी थी जड़े लेकर; क्यों ?'' [16] इस कहानी में एक पत्नी का अपने पति के प्रति अनन्य प्रेम व पतिव्रत भावना दिखाई देती है।

निराला जी की कहानी 'श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी' में बताया गया है कि पति–पत्नी के आपसी समझ और सहयोग से दोनों विकास पथ पर आगे बढ़ सकते हैं। निराला जी सुपर्णा और गजानन्द शास्त्री जी के संबंध में लिखते हैं कि– ''सुपर्णा का जीवन शास्त्रीजी के लिए भी जीवन सिद्ध हुआ। शास्त्रीजी अपना कारोबार बढ़ाने लगे। सुपर्णा को वैदक की अनुवादित हिन्दी पुस्तकें देने लगे, नाड़ी–विचार चर्चा आदि करने लगे।... एक दिन श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी के नाम से स्त्रियों के लिए बिना फीसवाला रोग परीक्षणालय खोल दिया।'' [17] इस कहानी में निराला जी ने पति–पत्नी के बीच के आपसी समझ व सहयोग की भावना को दिखलाया है।

निराला व भारती जी के गद्य रचनाओं में पारिवारिक रिश्तों व पारिवारिक मूल्यों को बारिकी से प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। दोनों रचनाकारों के गद्य रचनाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भारती जी ने अपनी रचनाओं में पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन का सुखद व दुखद दोनों रूपों का चित्रण किया है, जबकि निराला जी ने दाम्पत्य जीवन की प्रगाढ़ता व सुनहरे पक्ष को ही अधिक प्रकाशित किया है।

भाई–बहनों का संबंध

भाई–बहन का संबंध स्नेह, आदर तथा प्रेम से भरा होता है। भाई–बहनों के मध्य यदी अच्छे संबंध हो तो परिवार का माहौल खुशनुमा होता है। इसके अभाव में कई पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। निराला व भारती जी की रचनाओं में भाई–बहनों के संबंधों को उजागर किया गया है।

भारती जी की कहानी 'सावित्री नम्बर दो' में सावित्री की बीमारी की वजह से उनके घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। वह अपने बचपन और अपने छोटे भाई के बचपन की तुलना करते हुए सोचती है कि–''लाड़ला बचपन बिताने वाली मुझ–जैसी दीदी के छोटे भैया का चबुतरे पर खड़े होकर आइसक्रीमवालों, चाटवालों को भूखी लाचार आँखों से एकटक देखना..... मुझे अब भी कचोट जाता है।'' [18] सावित्री की बीमारी की वजह से जो आर्थिक तंगी उत्पन्न हुई थी उसके कारण उसके छोटे भाई को अभाव में रहना पड़ता था। जिसके कारण सावित्री को दुख होता था। इस कहानी में जब सावित्री अपनी बीमारी और कुंठा की वजह से अपनी छोटी बहन और अपने पति के संबंधों को लेकर बातें करती है तो उसकी छोटी बहन कहती है कि– ''दिदिया ! ख़बरदार जो तुमने अब वाही–तबाही बकी। बकना है तो अपना कमरा बन्द कर लो और जो चाहो सो बको। लेकिन अपना पाप मेरे मत्थे मढ़ती रही हो तो अब यह नहीं होने का। बहुत सह लिया मैंने। जितना दिदिया–दिदिया कर पाँव से लिपटती रही उतना तुम मुझे बलि चढ़ाती गयीं।'' [19] सावित्री की छोटी बहन उसे बहुत प्रेम व आदर किया करती थी। पर जब सावित्री ने उसके व अपने पति के संबंधों को लेकर अनुचित बातें कही तो यह बात उसकी छोटी बहन को बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने इस बात का प्रतिकार किया। इस कहानी में दो बहनों के संबंधों में आने वाले उतार–चढ़ाव का वर्णन है।

भारती जी कहानी' बंद गली का आखिरी मकान' में भाई–बहनों के बनते–टूटते रिश्तों का चित्रण है। इस कहानी में बिटौनी जब चार वर्ष की थी, तब उसकी माँ का देहावसान हो गया। उसके बाद उसके भाई मुंशीजी ने अपनी छोटी बहन को अपनी बेटी के समान पाला। उन्होंने इसके लिए विवाह भी नहीं किया। पर बाद में बिरजा से विवाह कर लेने के बाद बिटौनी का व्यवहार अपने भाई के प्रति बहुत रूखा हो गया। इसी कहानी में हरदेइया का भाई अपनी ही बहन की बेटी को बेचने की बात करता है। इस कहानी में परिस्थिति के अनुसार भाई–बहनों के बीच के रिश्तों में आने वाले बदलाव को बताया गया है।

निराला जी की कहानी 'कमला' में कमला और उसके भाई राजकिशोर के मध्य मधुर संबंध दिखाई देता है। कमला को उसके परिवार के लोग त्याग देते हैं। उसके माता–पिता का भी निधन हो चुका था। अब उसके जीवन का एकमात्र सहारा उसका भाई ही था। राजकिशोर अपनी बहन को बहुत स्नेह व आदर करता था। दोनों एक–दूसरे का संबंल बनते हैं।

दोनों रचनाकारों के गद्य रचनाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इन दोनों रचनाकारों ने परिस्थिति के अनुरूप भाई–बहनों के बनते–बिगड़ते रिश्तों का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है। इनकी रचनाएँ हमें प्रेरणा देती है कि यदी भाई–बहन के रिश्ते में स्वार्थ न आए तो ये मधुर रिश्ता एक–दूसरे का सहारा बन जाता है।

विवाहोत्तर रिश्तेदारों का संबंध

विवाहोपरान्त पति–पत्नी केवल एक–दूसरे से ही नहीं अपितु परस्पर एक–दूसरे के परिवार से भी जुड़ जाते हैं। पितृ सत्तात्मक परिवार में विवाह के बाद स्त्री अपने पति के घर में निवास करती है, अतः पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का जीवन विवाहोत्तर रिश्तेदारों से अधिक प्रभावित रहता है।

भारती जी की कहानी 'मरीज नम्बर सात' में मरणासन्न महिला के पास उसकी ननद आती है। वह बीमार महिला के दुख बाँटनें के स्थान पर उससे उसके पति के दूसरे विवाह की बात छेड़कर उसे और तकलीफ देती है। वह औरत कहती है– ''बच्चे तो मुझसे खूब हिल गए हैं। बिटिया तो आ ही नहीं रही थी। हमने अनार की लालच दी तो आयी। तुम बच्चों की तरफ से चिन्ता नहीं करना। भैया दूसरा ब्याह करेंगे तो बच्चों को मैं रख लूँगी।'' [20] वास्तव में उसे बीमार महिला की कोई चिंता नहीं थी वह और परिवार के बाकी सदस्य तो केवल उसकी मृत्यु का इंतज़ार करते हैं। इस कहानी में एक बीमार बहु अपने ससुराल वालों के लिए महत्वहीन वस्तु के समान दिखाई देती है।

निराला जी ने 'सुकुल की बीबी' कहानी में निराला जी का उनके ससुराल वालों से संबंध का पता चलता है। उन्होंने इस कहानी में अपने संबंध में लिखा है कि वे पढ़ाई में विशेष रूचि नहीं रखते थे। जब उनके परीक्षा परिणाम आने वाले थे तो वे अपने पिताजी के मार के डर से बहाना बनाकर घर छोड़कर ससुराल चले आए। वहाँ उन्होंने अपने ससुराल वालों से कहा कि गावँ के एक खेत के मामले में फौजदारी हो गयी है, जिसमें पिताजी गिरफ्तार हो गए हैं। उन्होंने कहा है कि अपने ससुरजी से विवाह के करारवाले बाकी 300 रुपये मँगवाया है। ''ससुरजी के पास रुपये नहीं थे। पर सासुजी घबरायीं कि ऐसे मौके पर मदद न की जायगी, तो त्रिपाठी जी कैद से छूटकर अपने लड़के की दूसरी शादी कर लेंगे।'' [21] निराला जी की सास ये बातें सोचकर भयभीत हो जाती है। यहाँ तत्कालीन समाज में प्रचलित दहेज प्रथा व लड़के वालों के प्रति लड़की के घर के लोगों के मन में व्याप्त भय की भावना का चित्रण है।

भारती जी कहानी' बंद गली का आखिरी मकान' में हरदेई अपने दामाद मुंशी जी को बेटे के समान मानती थी। वह कहती है कि– ''दामाद कहो तो, बेटा कहो तो, हमारे लिए जो हैं सो मुंशीजी है।'' [22] वह अपने दामाद को ईश्वर तुल्य मानती है। वह राघोराम से कहती है– ''बाप के पैर छू ले बेटवा! स्सबकी नैया पार लगायी मुंशीजी ने। हम लोगों के लिए तो भगवान हैं।'' [23] हरदेई अपने दामाद को बहुत आदर व सम्मान देती थी। इस कहानी में सास व दामाद के मधुर संबंध दिखाई देते हैं।

दोनों रचनाकारों ने परिवार में विवाहोत्तर रिश्तेदारों जैसे–ननद, दामाद, जेठ आदि से रिश्तों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। रक्त संबंधियों की भाँति विवाहोत्तर रिश्तेदार भी परिवार के अभिन्न अंग होते हैं। पर इन रिश्तों का आपस में टकराव परिवार की सुख–शांति छीन लेता है।

निराला व धर्मवीर भारती की कहानियों में पारिवारिक समस्याएँ

निराला व भारती जी की कहानियों में परिवार से जुड़ी कई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इनमें बेमेल विवाह, पुनर्विवाह से उत्पन्न समस्या, पारिवारिक सदस्यों के मध्य वैचारिक मतभेद से उत्पन्न समस्या, स्वार्थ, ईर्ष्या आदि से उत्पन्न समस्याएँ किस तरह व्यक्ति व परिवार को दुष्प्रभावित करते हैं इसका वास्तविक चित्रण दिखाई देता है।

भारती जी की कहानी 'कुलटा' में पारिवारिक समस्याएँ दिखाई देती हैं। लाली जब विधवा हो जाती है तो उसके सास–ससूर उसका साथ नहीं देते। अपने बच्चों के पालन–पोषण के लिए वह पुनर्विवाह करती है पर उसका पति व सौतेले बच्चे उसे कई प्रकार की यातनाएँ देते थे। जिसके कारण लाली का जीवन कष्टमय हो जाता है।

निराला जी की कहानी 'कमला' में पारिवारिक समस्या का चित्रण मिलता है। कमला के ननिहाल और पितापक्ष के रिश्तेदार बड़े स्वार्थी थे । वे कमला का अहित चाहते थे। ''कमला के ननिहाल वाले भैयाचार कमला की नानी को गरीबी के कारण छोड़े हुए थे कि खान–पान रखने से लड़की की शादी करानी पड़ेगी। अलग होने के कारण भी उन लोगों ने गढ़ लिए थे, जिनमें कमला की नानी और कुमारी माता के चाल–चलन में फर्क मुख्य था। यह सुनकर कमला के पिता–पक्ष के भैयाचार विवाह के समय से अब तक कमला की माता से कोई तअल्लुक नहीं रखते। कमला के विवाह के समय भी नहीं गये। विवाह हो जाने पर वाजपेयीजी से शिकायत करने की ताक लगाये बैठे। सोचा था, कमला का जीवन बरबाद कर देंगे।'' [24] इस कहानी में परिवार के लोगों के षडयंत्र का वर्णन किया गया है।

निराला जी की कहानी 'सुकुल की बीवी' में पारिवारिक समस्याओं का चित्रण मिलता है। सुकुल की दूसरी पत्नी अपनी माँ के जीवन में आए विषमताओं का वर्णन करते हुए बताती है कि– ''वाजपेयीजी को एक ब्याह से संतोष नहीं हुआ। दूसरी शादी की। तब मैं पेट में थी। बेहटा मेरा ननिहाल है। सिर्फ नानी थीं। ईश्वर इच्छा, उनका देहान्त हो गया.... घर में किसी तरह गुजर न हुई, तब, लोटा–थाली बेचकर, उस खर्च से माँ लखनऊ गयीं। घर में पैर रखते, ससुर और पति ने तेवर बदले। पति ने कहा, इसके हमल है, हमारा नहीं। ससुर ने कहा, बदचलन है, धरम बिगाड़ने आयी है, भली होती, तो चली न आती..... सौत ने धरती उठा ली। एक रात को पति ने बाँह पकड़कर निकाल दिया।'' [25] उस महिला को उसके ही परिजन कष्ट देते हैं जिससे उसका जीवन नरकीय हो जाता है। उसे एक मुस्लिम युवक ने आश्रय दिया । उसकी बेटी से सुकुल ने विवाहित होते हुए भी प्रेम संबंध स्थापित किया। वह सुकुल के घर में ही रहने के लिए आ गयी। जिसकी खबर मिलते ही सुकुल की पहली बीवी भी घर में आ जाती है। जिससे तीनों के जीवन में समस्या निर्मित हो जाती है। निराला जी ने इस कहानी में विविध पारिवारिक समस्या का चित्रण किया है।

भारती जी की कहानी 'बंद गली का आखिरी मकान' में पारिवारिक समस्याओं का चित्रण मिलता है। मुंशी जी के अपने ही रिश्तेदार प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से उसके विरोधी होते जा रहे थे। वे सोचते हैं कि– ''इधर सब संबंधी हैं तो उधर भी तो सब अपने हैं..... दोनों संबंधी हैं, लेकिन दोनों ही मुंशीजी का पक्ष लेकर मुंशीजी के खिलाफ़ हल्ला बोल रहे हैं।'' [26] जिससे उनका पारिवारिक जीवन प्रभावित हो जाता है।

भारती जी की कहानी 'सावित्री नम्बर दो' में सावित्री की बीमारी की वजह से उसके मायके और ससुराल दोनों परिवार में समस्याग्रस्त स्थिति निर्मित हो गयी थी। सावित्री अपनी बीमारी से उत्पन्न कुंठा को दूसरों को अपानित कर दूर करने का प्रयास करती थी। जिससे स्थिति और बिगड़ रही थी। सावित्री अपने पति से अपने ससुराल वालों के बारे में कहती है कि– ''क्या है तुम्हारे घर में ? सब रोगहे हैं। सब कुत्सित हैं। तुम लोगों को बड़ा पढ़े–लिखे होने का घमण्ड है ! ज़बान मत खुलवाओ। बहन छैल–छबीली बनकर मास्टरों के यहाँ घूमती–फिरती है तो फ़र्स्ट पोज़ीशन लाती है।'' [27] इसी प्रकार वह अपने पति और छोटी बहन के रिश्ते को भी कलंकित करने का प्रयास करती है। कहानी के अंत में सावित्री के असहाय और निर्धन हो चुके माता–पिता अपनी पुत्री के जीवित रहते ही उसके मृत्यु के उपरांत अपनी छोटी बेटी का विवाह सावित्री के पति से करवाने की मनसा बना लेते है। इस बात से सावित्री को अपने घर के सदस्यों से घृणा सी होने लगती है। भारती जी ने इस कहानी में पारिवारिक समस्या को बारिकी से उकेरा है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व धर्मवीर भारती दोनों ही रचनाकारों ने परिवार में व्याप्त विविध समस्याओं का चित्रण अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। इनकी रचनाओं में पति–पत्नी, माँ–बच्चे, सास–ससुर, भाई–बहन आदि रिश्तेदारों के मध्य के बनते–बिगड़ते रिश्तों को चित्रित किया गया है। रिश्तों के बीच वैमनस्य, स्वार्थ, ईर्ष्या व अमानवीयता आ जाने के कारण पारिवारिक समस्याओं का

जन्म हो जाता है। ये समस्याएँ न केवल व्यक्ति व परिवार का अहित करते हैं अपितु इससे समाज का विकास भी अवरूद्ध हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा महादेवी–श्रृंखला की कड़ियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1997, पृ.–78
2. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (एक बच्ची की कीमत), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 122
3. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (एक बच्ची की कीमत), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 122
4. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावली खंड–4(दो दाने) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 416
5. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बन्द गली का आखिरी मकान), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 280
6. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (भूखा ईश्वर) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 114
7. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावली खंड–4 (देवी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 358
8. नवल नंदकिशोर (संपा.)–निराला रचनावली खंड–4 (हिरणी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014 पृ. 327
9. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (नारी और निर्वाण) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 202
10. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (नारी और निर्वाण) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 203–204
11. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावलीखंड–4 (अर्थ) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 335
12. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (गुलकी बन्नों) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 232
13. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (सावित्री नम्बर दो) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 241
14. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (चाँद और टूटे हुए लोग) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 32
15. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (मुर्दों का गाँव) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 117
16. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (मुर्दों का गाँव) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 119
17. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावलीखंड–4 (श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 408
18. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (सावित्री नम्बर दो) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 240
19. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (सावित्री नम्बर दो) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 255
20. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (मरीज नम्बर सात) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 95–96
21. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावली खंड–4(सुकुल की बीवी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 393
22. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बन्द गली का आखिरी मकान) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 295
23. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बन्द गली का आखिरी मकान) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011,पृ. 291–292
24. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावली खंड–4 (कमला) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण,2014, पृ. 297
25. नवल नंदकिशोर (संपा.)– निराला रचनावली खंड–4 (सुकुल की बीवी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 397
26. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बंद गली का आखिरी मकान), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 318
27. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (सावित्री नम्बर दो), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 244